Paper- VII

1

VIKRAMSHILA UNIVERSITY

बिहार प्रांत के भागलपुर जिले में स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय नालंदा के समान एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का शिक्षा केन्द्र रहा है। यह भागलपुर से 24 मील पूर्व की ओर पथर घाट नामक पहाड़ी पर स्थित था। यहाँ से प्राचीन काल के विस्तृत खण्डहर प्राप्त होते हैं।

विक्रमशीला के महाविहार की स्थापना पाल नरेश धर्मपाल (775 - 800 ई०) में करवायी थी। उसने यहाँ मंदिर तथा मठ बनवाये और उन्हें उदारता पूर्वक दान दिये। यहाँ 160 विहार तथा व्याख्यान के लिए अनेक कक्ष बने हुए थे। विक्रमशीला के सभा भवन में 8000 व्यक्ति एक साथ बैठ सकते थे। स्रोत बताते हैं कि विक्रमशीला विश्वविद्यालय एक विस्तृत चहार दिवारी से घिरा था। जिसके अहाते में 8 विहारों के 108 अध्यापक और हजारों भिक्षु अपने ज्ञान की श्री वृद्धि कर रहे थे। जबकि चहार दीवारी के बाहर 107 बौद्ध मंदिर बने हुए थे। धर्मपाल के उत्तराधिकारी तेरहवीं सदी तक इसे राजकीय संरक्षण प्रदान करते रहे। परिणामस्वरुप विक्रमशिला विश्वविद्यालय लगभग चार शताब्दियों से भी अधिक समय तक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बना रहा।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय में छः महाविद्यालय (चार कॉलेज प्रवेश द्वार पर और दो कॉलेज कैम्पस के भीतर) थे। प्रत्येक में एक केन्द्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे।

केन्द्रीय कक्ष को 'विज्ञान भवन' कहा जाता था।
प्रत्येक महाविद्यालय में एक प्रवेश द्वार होता था तथा प्रत्येक प्रवेश द्वार पर एक-२ द्वार पण्डित बैठता था। द्वार पण्डित के पद पर उच्च कोटी के विद्वानों की ही नियुक्ति की जाती थी। विक्रमशीला विश्वविद्यालय में शिक्षकों की संख्या 648 थी। द्वार पण्डितों के समक्ष मौखिक परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले छात्र ही विश्वविद्यालय में प्रवेश पा सकते थे।
~~स्पस्स्त~~ स्पष्टता: ये पण्डित आचार्य ज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे तंत्र योग, न्याय काव्य और व्याकरण में विख्यात हो थे। कनक के शासन काल में निम्नलिखित द्वार पण्डितों के नाम हमें मिलते है: —

(1) पूर्व द्वार → रत्नाकर शांति
(2) पश्चिम द्वार → वागीश्वर कीर्ति (वाराणसेय)
(3) उत्तर द्वार → नरोप
(4) दक्षिण द्वार → ~~प्र~~ प्रज्ञाकर मति
(5) प्रथम केन्द्रीय द्वार → रत्नव्रज (कश्मीरी)
(6) द्वितीय केन्द्रीय द्वार → ज्ञान श्रीमित्र (गौडीय)

हरिभद्र विक्रमशीला के प्रथम आचार्य कुलपति थे। इन्हें किंही शीलभद्र भी कहा जाता है। ये नालंदा के आचार्य शांति रक्षित के शिष्य थे। पाल नरेश रामपाल (1057-1102) के समय यहां कुल 108 आचार्य और 1,000 भिक्षु शिक्षा प्राप्त किया करते थे। इनके समाज में ~~सम्मानपूर्वक~~ उनके योगदान

गुप्त इस विश्वविद्यालय के कुलपति थे।

=> पाठ्यक्रम => पाठ्यक्रम के स्तर के मामले में विक्रमशिला अपने समकालीन विश्वविद्यालय से कहीं आगे था। विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों का संबंध मुख्य रूप से धार्मिक और दार्शनिक ही था। ये विश्वविद्यालय मुख्यतः भिक्षुओं की शिक्षा-दीक्षा के लिए खोले गये थे कि न कि जनसाधारण के लिए। इसलिए पाठ्यक्रम भी उसी प्रकार बनाया गया था कि बौद्ध जगत के तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम तत्कालीन बौद्ध सिद्धांतों के अनुरूप संगठित तथा योजनाबद्ध था। बौद्ध दर्शन, कर्मशास्त्र, हेतुविद्या (तर्कशास्त्र) शब्द विद्या (व्याकरण) के साथ तत्वमीमांसा, चिकित्सा विद्या और शिल्प विद्या का अध्ययन विशेष रूप से किया जाता था। इसके अतिरिक्त न्याय, सांख्य और योगदर्शन की भी सुनिश्चित व्यवस्था थी।

पाठ्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण भाग था तंत्रों का अध्ययन। तंत्र इतना व्यापक विषय था कि इसके अन्तर्गत धर्म, दर्शन, ज्योतिष, खगोल, रसायन, चिकित्सा, रोग विज्ञान, शरीर क्रिया और योग, इन्द्रजाल सभी सम्मिलित थे। इस रूप तंत्र . मंत्र , सिद्धि

रहस्यमयी क्रियाओं और चमत्कारिक विद्याओं का अध्ययन लोकप्रिय विषय बन गया था। सतीश चन्द्र के अनुसार "यह महाविहार तांत्रिक अध्ययन का एक केन्द्र था।"

कुछ मायने में विक्रमशिला के पाठ्यक्रमों का व्यवस्थित क्रम नालंदा से कहीं बढ़कर था। तंत्रशास्त्र व दर्शनशास्त्र के अध्ययन अध्यापन के मामले में विक्रमशिला की अपनी विशिष्ट परम्परा थी, जिसकी वजह इससे जुड़े सिद्धों ने मजबूत करदी थी।

पुस्तकालय ⟹ विक्रमशिला के पास एक समृद्ध पुस्तकालय था। तंत्रविद्या तर्कविद्या एवं तत्वमीमांसा सहित ब्राह्मणिक दर्शन और बौद्ध दर्शन से संबन्धित ग्रंथों का यहां विशाल संग्रह मौजूद था। यहाँ की पाण्डुलिपियों को तैयार करने के लिए आचार्य और शोधार्थी दोनों अधिकृत थे।

शिक्षण विधि ⟹ विक्रमशीला की शिक्षण विधियों में बौद्धिक शिक्षा की प्रधानता थी। इसके लिए मौखिक एवं पुस्तक - व्याख्या व्याख्यान माला और शास्त्रार्थ विधि को व्यावहारिक तौर पर लागू किया जाता था। पठन-पाठन के लिए निधी कक्षाएं और सामूहिक की प्रणाली दोनों लागू थे। बौद्ध विहारों में विद्यार्थी केवल छह वर्ष की शिक्षा प्राप्त करते थे। किन्तु जो भिक्षु बनना चाहते थे, उन्हें अधिक समय तक रहना पड़ता था। (शेष भाग Note के बाद में)